मुद्राएं (सिक्के) पुरातात्विक सामग्री में मुद्राओं का ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है, ये मुद्राएँ प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास लिखने के बड़े ही उपयोगी सिद्ध हुई हैं मुद्राओं के आधार पर ही इनके राज्यकाल का पूरा इतिहास लिखना सम्भव हुआ है, भारत के विभिन्न भागों से विभिन्न प्रकार की मुद्राएं तथा स्वर्ण मुद्राएं, रजत मुद्राएं तथा ताम्र मुद्राएं प्राप्त हुई हैं इन मुद्राओं अथवा सिक्कों पर पड़ी तिथियों से काल क्रम को निर्धारित करने में सहायता मिलती है मुद्राएं तथा सिक्कों से तत्कालीन आर्थिक दशा, सम्बन्धित सम्राट की राज्य सीमा, कला, धार्मिक दशा तथा अन्य अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक तथ्यों की जानकारी प्राप्त होती है अतः गुप्तकाल तक ही मुद्राओं का बहुत अधिक महत्व है इसके बाद के काल में मुद्राओं का महत्व इतिहास लिखने की दृष्टि से नगण्य हो जाता है

स्मारक एवं भवन (monuments)

पुरातात्विक सामग्री में अभिलेख और मुद्राओं के साथ ही स्मारकों का अत्यन्त ही महत्वपूर्ण स्थान है, राजनीतिक दृष्टिकोण से तो स्मारकों का महत्व अधिक नहीं है किन्तु धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से स्मारकों का बहुत अधिक महत्व है इसके अन्तर्गत सभी प्रकार के भवन, मूर्तियां, इमारतें, कलात्मक वस्तुएं, मन्दिर विहार स्तूप आदि जानकारी प्रदान करते हैं अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से स्मारकों को दो भागों में बाँटा जा सकता है

(क) देशी स्मारक (ख) विदेशी स्मारक -

(क) **देशी स्मारक** → हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, तक्षशिला, कौशाम्बी, मथुरा, पाटलिपुत्र, नालन्दा, आदि प्राचीन नगरों के उत्खनन से भारतीय संस्कृति पर प्रकाश पड़ता है

(ख) **विदेशी स्मारक** → कम्बोडिया स्थित अंगकोरवाट का मन्दिर, जावा स्थित बोरोबुदूर मंदिर तथा

Scanned with CamScanner

बाली द्वीप से प्राप्त अनेक प्रतिमाओं से पता चलता है कि यहाँ भारतीय धर्म एवं संस्कृति का अत्यधिक प्रचार था।

अवशेष :- भारत के विभिन्न स्थलों पर हुए उत्खनन से प्रचुर मात्रा के अवशेष प्राप्त हुए हैं, इन अवशेषों से महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है, आदि मानव किस प्रकार उपलब्ध साधनों का प्रयोग कर अपना जीवन यापन किया, उनका समाज कैसा था? उनके कौन-कौन से उद्योग-धन्धे करते थे, उनका मुख्य व्यवसाय क्या था? आदि की पूर्ण जानकारी अवशेषों अर्थात् - बर्तन, हथियार, औजार, बटखरों, खिलौनों, सिक्कों के खण्डहर, खेती करना, पशु पालना, आदि से ही होती है।

मुहरें :- मुहरें भी प्राचीन भारतीय इतिहास जानने के मुख्य स्रोतों में से एक है, इन मुहरों के अर्थव्यवस्था पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है, इससे इतिहासकारों को इतिहास लिखने में बहुत मदद मिली है। मोहनजोदड़ों से प्राप्त 500 से अधिक मुहरों के आधार पर हड़प्पा संस्कृति के निवासियों की जानकारी प्राप्त हुई। इसी प्रकार प्राचीन वैशाली से 274 प्राप्त मुहरों से चौथी शताब्दी के व्यापारियों के श्रेणी की जानकारी प्राप्त हुई है, इन मुहरों से यह भी ज्ञात होता है कि इनकी शाखाएँ उत्तर भारत के नगरों में फैली हुई थीं।

इस प्रकार प्राचीन भारत के इतिहास के अध्ययन एवं निर्माण में पुरातात्विक स्रोत अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।

समाप्त।